मोदी से बड़ा झूठा न हुआ है न होगा, यह है किसान की आवाज!

ग्राउंड जीरो से विवेक की रिपोर्ट

भाईसाहब इस मोदी तै बड़ा झूठा न पैदा होया न होगा आग्गे, ये कहते हुए हापुड़ के रहने वाले 65 वर्षीय किसान सतपाल सहवाग ने गला साफ किया और अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए बोले, यो अमित शाह के चीज है भई? के समझा करे है यो अपने आप को? सारे भारत में योही एक पोलिटीसीयन होया है के? किसान की बात छोड़ कर इसे बांग्लादेशी याद आ रहे बस।

2 अक्तूबर, को हरिद्वार के टिकैत घाट से दिल्ली तक पैदल चल कर आये हजारों किसानों को ग्यारहवें दिन अचानक मोदी सरकार के पुलिसिया जवानों ने दिल्ली में घुसने से रोक दिया। गाजीपुर बॉर्डर पर किसानों का कहना था कि ऐसा क्या हो गया कि वे दिल्ली में नहीं घुस सकते? जब हरिद्वार से यहाँ तक शांतिपूर्ण तरीके से आये हैं तो अब क्या उनको पागल कुत्ते ने काटा है जो मार पीट करेंगे? 'हम सिर्फ किसान घाट तक जाना चाहते हैं, इसमें क्या खतरा है सरकार को?'

भारत का दुर्भाग्य है जो आज के दिन भी किसान पीटे गए। जो मीडिया इसे दिखा नहीं रहा या जो लोग हमारी इस गत को देखकर टीवी के चैनल बदल ले रहे हैं वो निश्चिंत न रहें, बस अगला नम्बर उन्ही का है। ये कहते हुए कानपूर देहात के 45 वर्षीय रामकरन भदौरिया ने दो कश बीडी के लिए और पाजामा उठा कर पुलिस की लाठी से लगी चोट को दिखाया।

गुस्से के गुबार को लगभग फोड़ने के अंदाज में बोले, "आप बताओ आप तो पढ़े लिखे हो ना, तो जब डाक्टर, वकील, रिक्शे वाला, मजदूर, अम्बानी, अदानी सब अपनी टीस खुद तय कर सकते हैं खुद, तो हम किसान अपनी फसल के दाम खुद क्यों नहीं तय कर सकते? और ये तो बात हम कर ही नहीं रहे, हमारी मांग तो बस इतनी है कि स्वामीनाथन आयोग को लागू किया जाए। तो इसमें हमे आप डंडे मारोगे?"

सफेद कुर्ते की आस्तीन चढ़ाये करीब साढे छह फीट के महेद्रपाल चौधरी अपने जाट होने का दंभ भरते हुए बोले भाई यो कैसी बात है कि म्हारे ट्रेक्टर 10 साल बाद ना चलेंगे, क्यों न चलेंगे? भई प्रदूषण चेक कर ले, जे न ठीक हो तब बोल, वरना हम क्या हर बार नए ट्रैक्टर खरीदें? और इतनी ही है तो तुम दे दो नए हम तो आप ही पुराने को आग लगा दें। रही बात पुलिस की तो हम तो जाट हैं, लट्ठ कुरते की जेब में धरे फिरें हम। यो तो शांतिपूर्ण मार्च था, पुलिस ने जबरजस्ती खूनखराबा कराया है जी। आप जरूर छापो हमारी ये बात।

अहिंसा के वाहक गाँधी जी और जय जवान जय किसान का नारा देने वाले लाल बहादुर शास्त्री के जन्म दिन पर मोदी सरकार ने हरिद्वार से पदयात्रा करते हुए दिल्ली किसान चौक तक जाने वाले किसानों को जवानों के हाथों पिटवाया। यदि स्वर्ग है तो वहाँ से बैठे गाँधी और शास्त्री एक दूसरे से आँखे नहीं मिला पाए होंगे कि कैसे हैप्पी बड्डु टू यू बोलें एक दूसरे को। मोदी जी इतने बढ़े राजनीतिज्ञ निकले कि विपक्षी तो विपक्षी खुद गाँधी और शास्त्री तक के लिए कोई विकल्प नहीं छोड़ा।

सतबीर सिंह जो मुरादनगर के किसान हैं बढ़ी नम्रता से अपनी बात रखते हुए बोले, 'हम पिछले कई महीनों से फसलों के भाव और कर्जे के लिए अपनी मांगे रख रहे हैं। जब किसी ने हमारी बात नहीं सुनी तब मजबूर हो कर हमने एक आन्दोलन का निर्णय लिया। इसकी तैयारी के लिए हम गाँव के हर घर गए और आटा जुटाया, गैस सीलेंडर और भट्टी भी जुटाई। सोने के लिए जाजम ली, हम एक महीने की तैयारी के साथ आये हैं क्योंकि हम जानते है ये लड़ाई हमे अपने बूते लड़नी है। यहाँ बैठा हर आदमी अपना राशन ले कर चला था। हम आर पार की लड़ाई के मूड में आये हैं इस बार।'

केशवानंद स्कूल गाजियाबाद के संचालक रामनिवास ढाका ने बताया कि वो खुद किसान परिवार से आते हैं और उनके स्कूल में ज्यादातर किसानों के बच्चे ही पढ़ते हैं, ऐसे में प्रदर्शन में आये किसानो को खिलाना उनका कर्तव्य है। ये सरकार बढ़ी मक्कार है, कैसे रोज मोदी झूठ बोल देता है कि 150 प्रतिशत एमएसपी दे दिया और लोन माफ कर दिए, स्वामीनाथन आयोग की अनुसंशाएं लागू करा दी। सब झूठ है। कुछ नहीं किया।

लोन माफी के नाम पर सिर्फ डिफाल्टर लोगों के लोन माफ हुए हैं। हमारे तो ना हुए जी। शुरू शुरू में योगी ने किये पर वो भी चकमा ही था। लोन माफ ना कर के क्रेडिट की लिमिट बढ़ा दी। मतलब और कर्जा ले लो और आत्महत्या कर लो। ऐसे मक्कार कुत्ते को जब खून मुंह लग जाए न तो उसके दांत तोड़ने पड़ते हैं वरना वो न सुधरे।

ये रिपोर्ट लिखे जाने तक किसानों ने अपना आन्दोलन वापस भी ले लिया। राजनाथ सिंह के आश्वासन पर कि उनके लोन माफ करने के लिए एक बढ़ी मीटिंग की जाएगी। बुदबुदाते किसानों में लगभग सभी का मानना है कि ये अगली मीठी गोली है जो सभी सरकारें किसानों को देती आयी हैं। वरना अम्बानी अदानी और दूसरे बढ़े उद्योगपतिओं के लोन माफ करते वक्त इस सरकार ने कौन सी बढ़ी मीटिंग की थी?

गांजे का कश मारते अधेड़ उम्र के मनसाराम किसानी से इतने आहत हो चुके हैं कि बोले भई मेरे बेटे को चपरासी लगवा दे कहीं, खेत बेच के जो पीसे लगेंगे दे दूंगा। वैसे भी अब किसानी में रखा को ना। जो थोड़ी बहुत फसल उगाते थे वो भी इब ये आवारा जानवर खा जाया करें। इसके लिए कोई नियम कायदा नहीं। अपने माँ बापों को अपने घर में क्यों न रखती ये सरकार? इन बातों पर कोई जवाब ही नहीं देते ये बेशर्म, और ना ते संसद में राहुल गाँधी के केसे सवाल का जवाब दिया इस झूठे ने। संसद में भी भाषण ही दिया करे बस।

ये विडम्बना ही है कि देश का पेट भरने वाले किसानों को अहिंसा दिवस पर हिंसा का शिकार होना पड़ा। कहां तो इनका स्वागत एक-एक मंत्री को खुद खड़े हो कर करना चाहिए था और कहां इन्हीं किसानों के बेटों से, जो जवानों की शक्ल में हैं आपस में ही भिड़ा दिया गया। नथूने फुला फुला कर मीडिया से रूबरू होने वाले मोदी सरकार के मंत्रियों को अम्बानी के बचाव के सभी तरीके पता हैं पर किसान को मारने के हजार तरीके हैं। सीधे मुंह बात न करने वाले दम्भी नेताओं ने एक शांतिपूर्ण आन्दोलन को उग्र रूप दे दिया।

अगर मोदी जी ने स्वामीनाथन रिपोर्ट लागू कर दी है तो फिर इन किसानो पर लाठी क्यों बरसा रहे हैं? आने देते दिल्ली, उनसे बात करते और समझा देते कि जो मांग वो कर रहे हैं वे तो पहले ही पूरी की जा चुकी हैं। दिल्ली एनसीआर में 10 साल पुराने ट्रैक्टर नहीं चलने का आदेश क्या सोच कर दिया गया? यदि ट्रैक्टर प्रदूषण नहीं फैलाता तो क्या समस्या है? किसान नए के पैसे कहां से लाये? पर नहीं सरकार को तो मुनाफाखोर कंपनी का हित देखना है न कि किसान का। किसानों का लोन माफ नहीं हो सकता पर उद्योगपतियों का लोन और जुर्म दोनों माफ हैं।

अर्थशास्त्र में प्राथमिक क्षेत्र के योगदान को करना और तृतीय क्षेत्र के योगदान को बढ़ाना, विकसित होने का प्रमाण माना गया है। परंतु ये कहीं नहीं लिखा कि प्राथमिक क्षेत्र के योगदानकर्ता को भूखे मरना होगा। जिन देशों ने यह मॉडल अपनाया उन्होंने सिर्फ अपने यारों के लोन नहीं माफ किये बल्कि इसे सफल बनाने के लिए प्राथमिक क्षेत्र के लोगों को रोजगार मुहैया कराया न कि हमारी सरकारों की तरह किसान को आत्महत्या करने को छोड़ दिया।

नरेंद्र मोदी और अमित शाह को बेशक लगता हो कि वे बातों से किसान का पेट भर लेंगे पर लगता नहीं कि किसान इस बार 2019 के चुनाव में उनका पेट अपने वोट से भरने जा रहा है।

मरण तो नुई लागरे तो लड़कर मरांगे

नई दिल्ली। देश की राजधानी में पुलिस के जत्थे के सामने लगभग निहत्था होकर भी अपनी लाठी लहराते हुए डटे इस किसान की छवि दुनिया भर में वायरल हो रही है। यह छवि सत्ता के दमन के सामने एक साधारण किसान के निर्भय होकर प्रतिरोध के लिए प्रस्तुत हो जाने का प्रतीक बन चुकी है। प्रतिरोध की यह प्रतिनिधि छवि हरियाणा के 73 साल के नौजवान किसान चौ. लालू राम की है।

लालू राम हरियाणा के कैथल जिले के खुराना गांव के हैं। हरियाणा में चौ. महेंद्र सिंह टिकैत वाली भरतीय किसान यूनियन का वैसा प्रभाव नहीं है जैसा कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में। लेकिन ताऊ लालू राम इस भाकियू से बड़े चौधरी के जमाने से ही जुड़े हुए हैं। उनकी तस्वीर से प्रभावित हर कोई उनके बारे में जानने को उत्सुक था। आखिरकार, भाकियू के महासचिव धर्मेंद्र मलिक ने उनका नम्बर दिया तो उनसे फोन पर बात हुई।

कैथल की जरा सी पंजाबी टच वाली मिली-जुली हरियाणवी भाषा के मीठे-जोशीले डाइलेक्ट में ताऊ लालू राम ने कहा, "हम तो चले जांवा थे। आगे पलिस ने रोक्का। वे गाली बी देंगे, गोली बी मारेंगे लाठीचारज बी करेंगे अर हम चुपचाप मर जांगे? मरण तो नुई लागरे तो लड़कर मरांगे।।

ताऊ बताते हैं कि पुलिस कार्रवाई में बहुत से साथी आंदोलनकारियों की तरह वे भी जख्मी हैं लेकिन उनका हौसला बरकरार है। दु:ख बस एक बात का है, "ये (किसान) एक तो नी होंदे। जात-पात, धरम के नाम पे फूट में ते के धार काढें?" किसानों की एकता पर जोर देते हुए वे कहते हैं, "एक तो ये होवेंगे, अके पिट-पाट के होंवेगे। दूसरा रस्ता क्या है? फसल इनकी पिटण लागरी। जीरी (धान) पिटली। नोकरी नी मिलदी। महंगाई ऊपर की जाण लागरी। हमने तो हरियाणा वालों को बी कह लिया अक हो जाओ। के काड्डोगे, जाट-सैनी करके।"

ताऊ लालू राम ने कहा, किसान चुप नहीं बैठेंगे। यूनियन जब कहेगी, वे फिर आंदोलन में डरे बिना शामिल रहेंगे। किसान तो शांतिप्रिय है। दिल्ली में भी शांति से ही पहुंचा था। हमला सरकार ने किया। ऐसी उम्मीद नहीं थी पर सरकार का खटका तो रहता ही है। ऐसा भी हो सकता है, इस बात का हौसला लेकर ही आंदोलन में शामिल हुआ जाता है।

- धीरेश सैनी

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06